विजयानन्द विजय

युद्ध

युद्ध सिर्फ
मांग का सिंदूर ही नहीं मिटाते।
मां की कोख ही नहीं उजाड़ते।
बहनों की राखी ही नहीं लूटते।
छीन लेते हैं अमन-चैन।
रात-दिन का सुकून।
चेहरों से खुशी।
आंखों से नींद।
और भविष्य के सपने भी।
मौत के साये में घुट-घुटकर
सांस लेती है ज़िन्दगी।
हवाओं में घुली बारूदी गंध।
यत्र -तत्र बिखरे मांस के लोथड़े।
मिसाइलों और तोप के गोलों से
नेस्तनाबूद होते गांव और नगर।
राख और धुएं का गुबार।
जले खेत, घर और अनाज के कण।
बंजर होती यह उर्वर मिट्टी।
जार-जार आंसू बहाती है।
और गिरेबान पकड़कर पूछती है
हमसे, उन आततायियों से
कि क्या मिला
इंसानियत को मिटाने वाले
इस युद्ध से ?
भावनाओं - संवेदनाओं से रिक्त
मानवता के इस महाविनाश से ?

मृत्युंजय कुमार मनोज

एक पड़ोसी ने मुझसे कहा
सुना है-
कवियों में आपका है नाम
मतलब पागलपन है आपकी पहचान
हैं आप अति संवेदनशील
देखकर दुनिया की हालत
हो जाते हैं चिंतनशील
आपसे रहना होगा बचकर
आपके पास है शब्दों का नश्तर
आपकी माली हालत है नहीं बताने लायक
आप नहीं हैं उधारी के भी लायक
अपनी कविता छपवाने के लिए
खुद ही करते हैं भुगतान
और
संपादकों को दिन-रात दुआ सलाम
किस्मत रही यदि बहुत मेहरबान
तो बुढ़ौती में पाइएगा कागजी ईनाम
क्या होगा भला ऐसे प्रोफेशन से ?
जो भर न सके पेट दो वक्त की रोटी से
मैंने कहा-
कविताई नहीं है कोई प्रोफेशन
यह तो है एक पैसन
वैसे तो हर इंसान के अंदर
बसता है कविता
बस वह संवेदनशील दिखने से है बचता
फ़र्क इतना है कि
लोगों ने अपनी अंतरात्मा की आवाज को
सुनना कर दिया है बंद
वहीं बाकी है मुझमें अभी
थोड़ी-बहुत संवेदनशीलता का अंश
कविताई का नहीं लगा सकता है कोई मोल
यह तो बस होता है अनमोल
सच तो यह है कि
झकझोरती हैं कविताएं लोगों को
दिखाती हैं आईना सबको
चूंकि डरता है आप जैसे लोगों का अंतर्मन
इसलिए
संवेदनशीलता और कविताई को
कहते हैं आप पागलपन ।